क्या हमें सिर्फ आँखों देखी चीज़ों पर विश्वास करना चाहिए?

"परमेश्वर के वजूद पर शक करनेवाला इंसान सोचता है कि परमेश्वर और [हम इंसानों के] भविष्य के बारे में सच्चाई जानना नामुमकिन है, जिस बारे में ईसाई और दूसरे धर्म सिखाते हैं। वह यह भी कहता है, शायद आगे चलकर इस बारे में सच्चाई जानना मुमकिन हो, मगर फिलहाल तो यह एकदम नामुमकिन है।"

—सन् 1953 में कही तत्त्वज्ञानी बरट्रंड रसल की बात।

इस धारणा की शुरूआत थॉमस हक्सली ने की थी, जो जानवरों पर अध्ययन करनेवाला एक वैज्ञानिक था। उसका जन्म सन् 1825 में हुआ था। वह चार्ल्स डार्विन के समय में जीया था और विकासवाद की शिक्षा का बड़ा हिमायती था। सन् 1863 में, हक्सली ने लिखा कि उसे "ईसाइयों के इस दावे" का कोई सबूत नहीं मिला कि एक परमेश्वर है, "जो हमसे प्यार करता है और जिसे हमारी परवाह है।"

आज बहुत-से लोग, हक्सली जैसे मशहूर लोगों की धारणाओं को मानते हैं। उनका कहना है कि वे सिर्फ उन्हीं चीज़ों पर विश्वास करते हैं, जो दिखायी देती हैं। वे यह भी कहते हैं कि ऐसी किसी चीज़ या शख्स के वजूद पर विश्वास करना, जिसका कोई सबूत न हो, नासमझी है।

क्या बाइबल कहती है कि हमें परमेश्वर के वजूद पर आँख मूँदकर विश्वास कर लेना चाहिए? जी नहीं, बाइबल ऐसा बिलकुल नहीं सिखाती। इसके उलट, यह सिखाती है कि किसी की बातों को बिना सबूत के मान लेना अंधविश्वास ही नहीं, बेवकूफी भी है। बाइबल कहती है: "भोला तो हर एक बात को सच मानता है, परन्तु चतुर मनुष्य समझ बूझकर चलता है।"—नीतिवचन 14:15.

तो फिर, परमेश्वर पर विश्वास करने के बारे में क्या? क्या इस बात का कोई सबूत है कि परमेश्वर सचमुच वजूद में है? और अगर यह मान भी लिया जाए, तो क्या यह साबित किया जा सकता है कि वह हमसे प्यार करता है और उसे हमारी परवाह है?

परमेश्वर के गुण उसकी सृष्टि से ज़ाहिर होते हैं

बाइबल का एक लेखक पौलुस एक बार अथेने के बड़े-बड़े ज्ञानियों से बात कर रहा था, जो बड़े शक्की मिज़ाज के थे। उसने उनसे कहा कि परमेश्वर ने "पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया" है। फिर उसने उन्हें बताया कि परमेश्वर को हम इंसानों में दिलचस्पी है और "वह हम में से किसी से दूर नहीं।"—प्रेरितों 17:24-27.

पौलुस को इस बात का यकीन क्यों था कि परमेश्वर वजूद में है और उसे इंसानों में दिलचस्पी है? इसकी एक वजह उसने उस खत में बतायी, जो उसने रोम में रहनेवाले अपने साथी

बाइबल यह नहीं कहती कि हमें परमेश्वर के वजूद पर आँख मूँदकर विश्वास कर लेना चाहिए

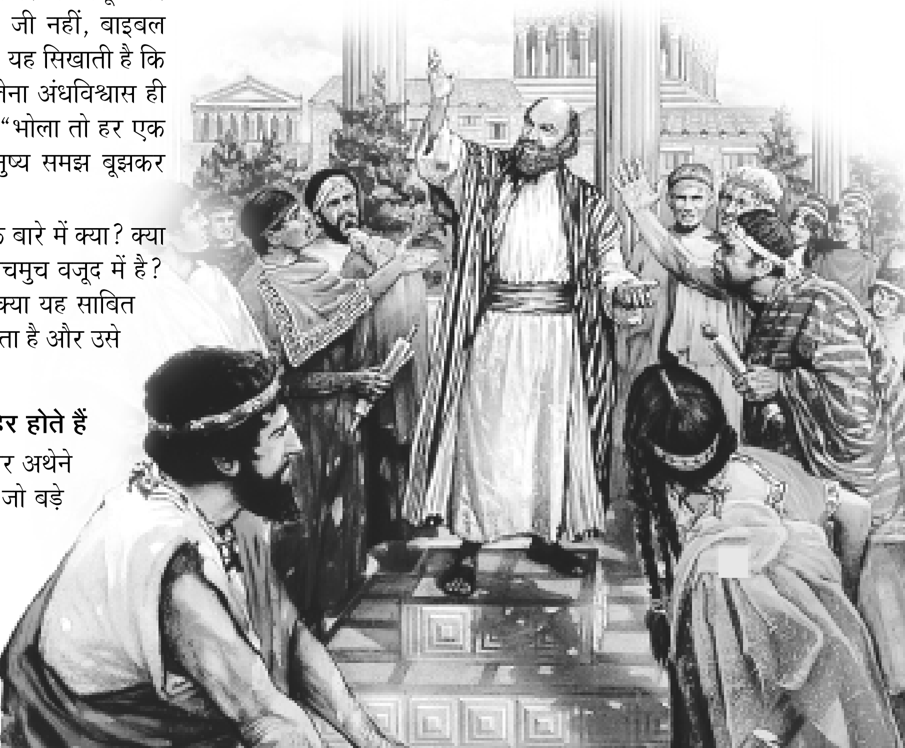

मसीहियों को लिखा था। उसने कहा: "[परमेश्वर] के अनदेखे गुण, अर्थात् उस की सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं।" —रोमियों 1:20.

आगे के लेखों में हम परमेश्वर के तीन गुणों पर गौर करेंगे, जो उसकी रचनाओं से साफ ज़ाहिर होते हैं। इन रचनाओं की जाँच करते वक्त खुद से पूछिए, 'परमेश्वर के गुणों के बारे में सीखने से मुझ पर क्या असर होता है?'

परमेश्वर की बुद्धि
कुदरत में देखी जा सकती है

"[वह] हमें पृथ्वी के पशुओं से अधिक शिक्षा देता,
और आकाश के पक्षियों से अधिक बुद्धि देता है।"—**अय्यूब 35:11.**

पक्षियों में गज़ब की काबिलीयतें होती हैं। वे आसमान में ऐसे कमाल के करतब दिखाते हैं कि हवाई जहाज़ बनानेवाले भी दाँतो तले उँगली दबा लेते हैं। कुछ पक्षी तो समंदर के ऊपर से उड़ते हुए हज़ारों किलोमीटर का लंबा सफर तय करते हैं। हालाँकि उन्हें दिशा दिखाने के लिए कोई निशान नहीं होता, फिर भी वे बिना भटके अपनी मंज़िल तक पहुँच जाते हैं।

पक्षियों में एक और बेमिसाल काबिलीयत होती है, जिससे उनके बनानेवाले की बुद्धि ज़ाहिर होती है। वह यह कि वे अलग-अलग आवाज़ें निकालकर और गाने गाकर एक-दूसरे से बातचीत करते हैं। आइए ऐसे कुछ पक्षियों की मिसाल पर गौर करें।

पंछियों की गुफ्तगू

कुछ पक्षी ऐसे होते हैं, जिनके चूज़े अंडे से बाहर निकलने से पहले ही बातचीत करने लगते हैं। ऐसी ही एक चिड़िया है, बटेर। एक मादा बटेर करीब आठ अंडे देती है। मगर वह सारे अंडे एक-साथ नहीं देती, बल्कि हर दिन एक अंडा देती है। ज़रा सोचिए, अगर अंडों के अंदर चूज़ों को बढ़ने में बराबर का वक्त लगे, तो एक दिन में एक ही अंडे में से चूज़ा निकलेगा। इस तरह सारे चूज़ों को निकलने में आठ दिन लगेंगे। इन आठ दिनों के दौरान मादा बटेर को कितनी मुश्किल होगी, क्योंकि एक तरफ उसे चूज़ों की देखभाल करनी होगी और दूसरी तरफ बचे हुए अंडों को सेना भी होगा। मगर शुक्र है कि मादा को ऐसी तकलीफ नहीं उठानी पड़ती। क्योंकि होता यह है कि आठों अंडों से चूज़े एक ही दिन में छः घंटे के अंदर बाहर निकल आते हैं। यह कैसे मुमकिन होता है? खोजकर्ता बताते हैं कि इसकी खास वजह यह है कि बटेर के चूज़े जब अंडे में ही होते हैं, तभी वे एक-दूसरे से गुफ्तगू करने लगते हैं। वे ऐसी योजना बनाते हैं कि सभी चूज़े करीब-करीब एक ही समय में अंडों से बाहर निकल आते हैं।

पक्षियों में एक गौर करने लायक बात यह है कि जब उनके चूज़े बड़े होते हैं, तो उनमें से नर पक्षी आम तौर पर गाना गाते हैं। नर खासकर सहवास के मौसम में मादा को रिझाने और अपने घोंसले का इलाका तय करने के लिए ऐसा करता है। पक्षियों की हज़ारों जातियों में से हरेक जाति की अपनी एक अनोखी भाषा होती है। इससे मादा पक्षी को अपनी ही जाति का एक साथी ढूँढ़ने में मदद मिलती है।

पक्षी आम तौर पर सवेरे-सवेरे और शाम के वक्त गाना गाते हैं। इसके पीछे एक खास वजह होती है। वह यह कि इस समय हवा हौले-हौले चलती है और कोई शोर-शराबा भी नहीं होता है। खोजकर्ताओं ने पता लगाया है कि सुबह और शाम के वक्त पक्षियों के गाने की आवाज़, दिन के मुकाबले 20 गुना ज़्यादा साफ सुनायी देती है।

हालाँकि गाना तो ज़्यादातर नर पक्षी ही गाता है, मगर नर और मादा दोनों तरह-तरह की आवाज़ें निकालते हैं। और

उनकी हर आवाज़ का एक अलग ही मतलब होता है। मिसाल के लिए, चैफिंच नाम के पंछी नौ तरह की आवाज़ें निकालते हैं। जब वे किसी शिकारी परिंदे को आसमान में उड़ता देखते हैं, तो वे अपने साथी को खबरदार करने के लिए एक अलग तरह की आवाज़ लगाते हैं। लेकिन जब उन्हें ज़मीन पर से किसी खतरे का एहसास होता, तो वे एक दूसरी तरह की आवाज़ निकालते हैं।

एक नायाब तोहफा

बातचीत के मामले में पक्षियों में पायी जानेवाली यह बुद्धि वाकई काबिले-तारीफ है। लेकिन फिर भी इस मामले में इंसानों में कुछ ऐसी खूबियाँ हैं, जो उन्हें पक्षियों से अनूठा बनाती हैं। परमेश्वर ने इंसान को "आकाश के पक्षियों से अधिक बुद्धि[मान]" बनाया है, जैसे कि बाइबल की अय्यूब नाम की किताब का अध्याय 35, आयत 11 कहती है। इंसान बातचीत के मामले में किस तरह पक्षियों से ज़्यादा बुद्धिमान है? वह मुश्किल-से-मुश्किल बातों या विचारों को भी शब्दों में या हाव-भाव से बयान कर सकता है।

बातचीत के मामले में इंसानों में एक और काबिलीयत होती है, जो दूसरे किसी जीव-जंतु में नहीं होती। उनमें नयी भाषाएँ

बातचीत करने की काबिलीयत, परमेश्वर की तरफ से एक नायाब तोहफा है

सीखने की पैदाइशी काबिलीयत होती है, फिर चाहे वे कितनी ही पेचीदा क्यों न हों। इस बारे में इंटरनेट पर पायी जानेवाली एक पत्रिका *अमेरिकन साइंटिस्ट* कहती है, "नन्हे-मुन्ने बच्चे अपने माँ-बाप की बातें सुनकर खुद-ब-खुद उनकी भाषा सीख लेते हैं, फिर चाहे माँ-बाप उनसे बात ना भी करें। और कुछ बधिर बच्चे, जिन्हें घर पर साइन लैंग्वेज़ नहीं सिखायी जाती, वे अपने ही इशारों की एक नयी भाषा बना लेते हैं।"

अपने सोच-विचार और जज़बात को ज़बानी तौर पर या इशारों से कहने की हमारी काबिलीयत परमेश्वर की तरफ से सचमुच एक नायाब तोहफा है। यही नहीं, हम इंसानों को उससे भी बड़ा एक तोहफा दिया गया है, वह है कि हम प्रार्थना के ज़रिए परमेश्वर से बात कर सकते हैं। दरअसल, परमेश्वर यहोवा खुद हमें बढ़ावा देता है कि हम उससे बात करें। उसका वचन बाइबल कहती है: "किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं।"—फिलिप्पियों 4:6.

परमेश्वर यहोवा चाहता है कि कोई भी मुश्किल फैसला लेने से पहले हम उसके वचन बाइबल में ढूँढ़ें कि उसमें इस बारे में क्या सलाह दी गयी है। क्योंकि बाइबल में परमेश्वर ने ज़िंदगी के हर पहलू और हालात के बारे में जानकारी दर्ज़ करवायी है। अगर हम ऐसा करें, तो वह हमें उन सलाहों पर अमल करने में भी मदद देगा। इस बारे में बाइबल का एक लेखक याकूब कहता है: "यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है; और उस को दी जाएगी।"—याकूब 1:5.

परमेश्वर की बुद्धि का आप पर क्या असर होता है?

जब आप पंछियों के सुरीले गीत सुनते हैं या एक नन्हे से बच्चे को उसकी तोतली ज़बान में कुछ कहते सुनते हैं, तो आपको कैसा लगता है? क्या आपको परमेश्वर की बनायी इन रचनाओं में उसकी बुद्धि नज़र आती है?

दाऊद नाम के एक व्यक्ति ने जब अपने शरीर की शानदार बनावट पर गौर किया, तो वह परमेश्वर की स्तुति करने से खुद को रोक नहीं पाया। उसने अपने एक भजन में कहा: "मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिये कि मैं भयानक और अद्‌भुत रीति से रचा गया हूं। तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मैं इसे भली भांति जानता हूं।" (भजन 139:14) अगर आप कुदरत में पायी जानेवाली रचनाओं पर एहसान-भरे दिल से गौर करें, तो आप देख पाएँगे कि परमेश्वर ने उन्हें कितनी बुद्धिमानी से बनाया है। इससे परमेश्वर पर आपका भरोसा बढ़ेगा कि वह आपको सही मार्गदर्शन दे सकता है।

परमेश्वर की शक्ति
तारों से ज़ाहिर होती है

“अपनी आंखें उठाकर देखो कि किसने इन तारागणों की सृष्टि की है, कौन उनके गणों में से एक एक की अगुवाई करता, और उन सब को नाम ले लेकर बुलाता है। उसके विशाल सामर्थ्य और उसकी महाशक्ति के कारण उनमें से एक भी न छूटेगा।”—**यशायाह 40:26,** ***NHT.***

हमारा सूरज एक ऐसा तारा है, जो न तो बहुत बड़ा है और न ही बहुत छोटा। लेकिन फिर भी, इसका भार हमारी पृथ्वी के भार से 3,30,000 गुना ज़्यादा है। हमारी पृथ्वी के आस-पास के ज़्यादातर तारे सूरज के मुकाबले छोटे हैं। मगर कुछ ऐसे भी तारे हैं, जो सूरज से बड़े हैं, जैसे वी-382 सिगनी नाम का तारा। इसका भार हमारे सूरज के भार से तकरीबन 27 गुना ज़्यादा है।

सूरज से कितनी ऊर्जा निकलती है? इसे समझने के लिए कल्पना कीजिए कि एक जगह पर आग जल रही है और आप उससे 10 किलोमीटर दूर खड़े हैं। मगर फिर भी, आप उसकी तपन महसूस कर रहे हैं। तो ज़रा सोचिए, वह आग कितनी प्रचंड होगी? सूरज से हमारी पृथ्वी करीब 15 करोड़ किलो-मीटर दूर है। इसके बावजूद, जिस दिन चिलचिलाती धूप होती है, उस दिन सूरज की गर्मी से हमारी त्वचा झुलस सकती है! यह वाकई ताज्जुब कर देनेवाली बात है, क्योंकि हमारी पृथ्वी पर सूरज से निकलनेवाली ऊर्जा के दो अरब हिस्सों का करीब सिर्फ एक हिस्सा ही पहुँचता है। मगर यह ज़रा-सी ऊर्जा भी धरती पर जीवन कायम रखने के लिए काफी है।

दरअसल, वैज्ञानिकों ने हिसाब लगाया है कि सूरज जितनी ऊर्जा पैदा करता है, उससे पृथ्वी जैसे करीब 310 खरब ग्रहों पर ज़िंदगी कायम रखी जा सकती है। इसी सिलसिले में स्पेस वेदर प्रेडिक्शन सेंटर (एस.डब्ल्यू.पी.सी.) नाम की वेब-साइट कहती है, सूरज से *एक सेकंड* में जितनी ऊर्जा निकलती है, अगर उसे इकट्ठा कर लिया जाए, तो उस ऊर्जा को अमरीका “अगले 90,00,000 सालों तक इस्तेमाल कर सकता है, बशर्ते वह ऊर्जा को उसी दर से इस्तेमाल करे, जिस दर से वह आज कर रहा है।”

सूरज की ऊर्जा उसके केंद्र से निकलती है, जहाँ परमाणु आपस में टकराते हैं और जिससे बेहिसाब ऊर्जा पैदा होती है। सूरज बहुत बड़ा है, साथ ही उसके केंद्र का घनत्व भी बहुत ज़्यादा है। इस वजह से केंद्र में जो ऊर्जा पैदा होती है, उसे सूरज की ऊपरी सतह तक आने में लाखों साल लग जाते हैं। एस.डब्ल्यू.पी.सी. वेबसाइट कहती है, “अगर सूरज आज के दिन ऊर्जा पैदा करना बंद कर दे, तो अगले 5,00,00,000 सालों तक पृथ्वी पर इसका कोई असर नहीं होगा,” यानी इतने सालों तक पृथ्वी पर जीवन कायम रह सकता है!

अब ज़रा इस बात पर गौर कीजिए: अगर आप रात को खुले आसमान को निहारें, तो आपको हज़ारों-हज़ार तारे नज़र आएँगे। उनमें से हरेक तारा हमारे सूरज की तरह ढेर सारी ऊर्जा पैदा करता है। और वैज्ञानिक बताते हैं कि विश्व में अरबों-खरबों तारे हैं!

आखिर इतने सारे तारे आए कहाँ से? अंतरिक्ष के बारे में खोजबीन करनेवाले बहुत-से वैज्ञानिकों का मानना है कि विश्व आज से करीब 14 अरब साल पहले अचानक एक विस्फोट के बाद वजूद में आया। मगर ऐसा क्यों और कैसे हुआ, इसकी वजह वे नहीं बता सकते। मगर बाइबल कहती है: “आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।” (उत्पत्ति 1:1) तो फिर इसमें कोई शक नहीं कि जिसने ऊर्जा पैदा करनेवाले इन बड़े-बड़े तारों को रचा है, उसे हम ‘महाशक्तिशाली’ कह सकते हैं।—यशायाह 40:26.

परमेश्वर अपनी शक्ति का कैसे इस्तेमाल करता है

यहोवा परमेश्वर अपनी शक्ति का इस्तेमाल उन लोगों की मदद करने के लिए करता है, जो उसकी मरज़ी के मुताबिक चलते हैं। इसे समझने के लिए प्रेरित पौलुस की मिसाल लीजिए। उसने परमेश्वर के बारे में दूसरों को सिखाने में खुद को पूरी तरह लगा दिया था। पौलुस कोई फरिश्ता नहीं था, बल्कि हमारी तरह एक मामूली इंसान था। लेकिन विरोध के बावजूद वह दूसरों को

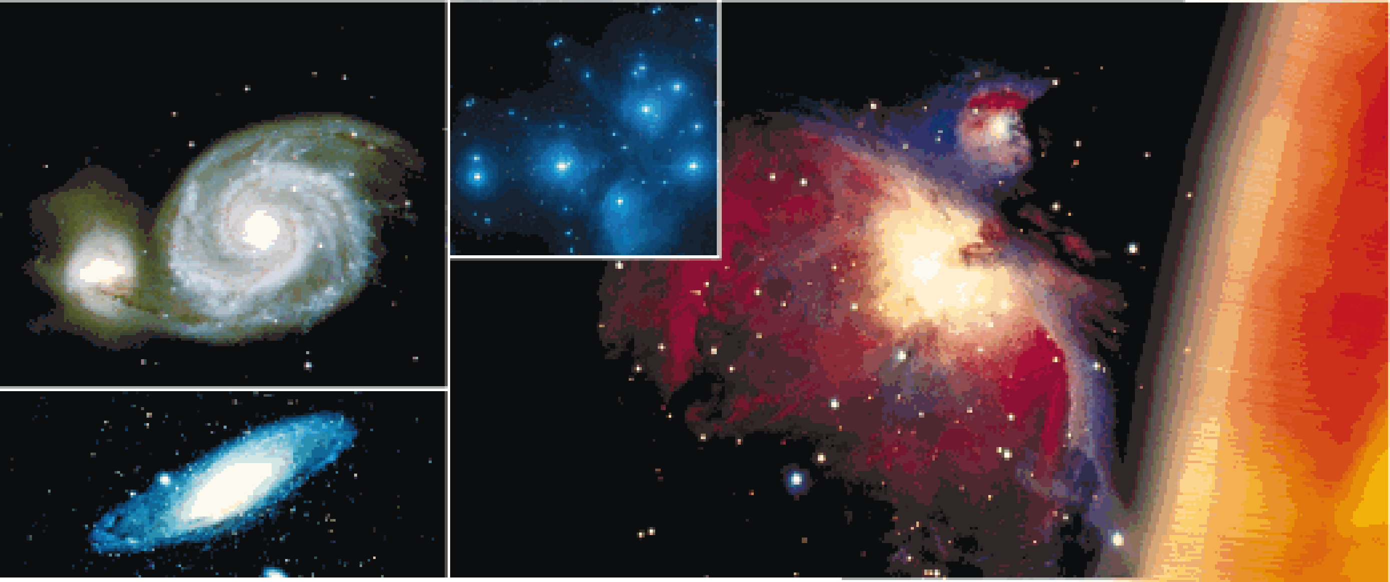

ऊपर बायीं तरफ सेः वर्लपूल मंदाकिनी, प्लीअडीज़ तारों का झुरमुट, मृग तारामंडल, एंड्रोमेडा मंदाकिनी

सिखाने में लगा रहा। वह यह कैसे कर पाया? वह खुद कहता है कि उसे परमेश्वर की तरफ से "असीम सामर्थ" मिली थी।—2 कुरिन्थियों 4:7-9.

यहोवा परमेश्वर अपनी शक्ति का इस्तेमाल उन लोगों का नाश करने के लिए भी करता है, जो उसके ठहराए सही-गलत के स्तरों पर चलने से इनकार करते हैं।

परमेश्वर की मदद से आप सही काम करने की हिम्मत पा सकते हैं

इस बारे में यीशु मसीह ने सदोम और अमोरा के विनाश और नूह के दिनों में आए जलप्रलय का ज़िक्र किया था। उसने बताया कि ये घटनाएँ इस बात की मिसाल हैं कि यहोवा परमेश्वर सिर्फ दुष्टों का नाश करने के लिए अपनी विनाश करने की शक्ति का इस्तेमाल करता है। यीशु ने यह भी भविष्यवाणी की थी कि यहोवा एक बार फिर दुष्टों का नाश करने के लिए अपनी शक्ति का इस्तेमाल करेगा और अब वह दिन दूर नहीं।—मत्ती 24:3, 37-39; लूका 17:26-30.

परमेश्वर की शक्ति का आप पर क्या असर होता है?

तारे साफ ज़ाहिर करते हैं कि परमेश्वर बहुत शक्तिशाली है। इस पर मनन करने के बाद शायद आप भी राजा दाऊद की तरह महसूस करें, जिसने कहाः "जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और

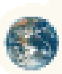

सूरज का भार हमारी पृथ्वी के भार से 3,30,000 गुना ज़्यादा है

तारागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूं; तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?"—भजन 8:3, 4.

वाकई, दूर-दूर तक फैले इस विश्व के आगे हम अपने आपको कितना छोटा महसूस करते हैं। लेकिन परमेश्वर की शक्ति को देखकर हमें घबराने की ज़रूरत नहीं। क्योंकि यहोवा ने एक भविष्यवक्ता को, जिसका नाम यशायाह था, उकसाया कि वह दिलासा देनेवाले इन शब्दों को लिखेः "वह [परमेश्वर] थके हुए को बल देता है और शक्तिहीन को बहुत सामर्थ देता है। तरुण तो थकते और श्रमित हो जाते हैं, और जवान ठोकर खाकर गिरते हैं; परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे, वे उकाबों की नाईं उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे।"—यशायाह 40:29-31.

अगर आप परमेश्वर की मरज़ी के मुताबिक चलना चाहते हैं, तो आप यकीन रख सकते हैं कि ऐसा करने में वह अपनी पवित्र शक्ति देकर आपकी मदद ज़रूर करेगा। लेकिन परमेश्वर की पवित्र शक्ति पाने के लिए आपको उससे गुज़ारिश करनी होगी। (लूका 11:13) परमेश्वर की मदद से आप हर मुश्किल का सामना कर सकते हैं और सही काम करने की हिम्मत भी पा सकते हैं।—फिलिप्पियों 4:13.

प्लीअडीज़: NASA, ESA and AURA/Caltech; ऊपर की बाकी तसवीरें: National Optical Astronomy Observatories

परमेश्वर का प्यार
माँ के प्यार से झलकता है

"क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूधपिउवे बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे? हां, वह तो भूल सकती है, परन्तु मैं तुझे नहीं भूल सकता।"—**यशायाह 49:15.**

एक माँ जब अपने नए जन्मे बच्चे को दूध पिलाती है, तब बच्चा अपनी माँ की गोद में कितने चैन से रहता है। यह देखकर हमें प्यार और कोमलता का क्या ही मीठा एहसास होता है! पैम नाम की एक माँ कहती है: "जब मैंने पहली बार अपने मुन्ने को अपनी गोद में उठाया, तो मेरा दिल प्यार से उमड़ने लगा। साथ ही, मुझे एहसास हुआ कि इस नन्ही-सी जान की परवरिश करना कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी है।"

सभी जानते हैं कि एक बच्चे के विकास का दारोमदार काफी हद तक इस बात पर होता है कि उसकी माँ उससे कितना प्यार करती है। और खोजबीन से भी यह बात सच साबित हुई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मानसिक स्वास्थ्य पर एक कार्यक्रम चलाया और उसका नतीजा एक लेख में छापा। उस लेख में यह लिखा है: "अध्ययनों से पता चला है कि जिन नन्हे-मुन्नों को उनकी माँ छोड़कर चली जाती है या जिन्हें उनकी माँ से जुदा कर दिया जाता है, वे थोड़े बड़े होने पर दुःखी और निराश रहते हैं। और कभी-कभी तो वे छोटी-छोटी बातों से बहुत डर जाते हैं।" इस लेख में ज़िक्र किया गया एक और अध्ययन दिखाता है कि जिन बच्चों को छुटपन से प्यार किया जाता है और जिन्हें परवाह दिखायी जाती है, वे उन बच्चों के मुकाबले ज़्यादा होशियार और तेज़ दिमागवाले होते हैं, जिन्हें नज़रअंदाज़ किया जाता है।

एक माँ अपने बच्चे से जितना प्यार करती है, उससे कहीं ज़्यादा परमेश्वर हमसे प्यार करता है और उसका प्यार हमेशा बना रहेगा

माँ का प्यार कितना मायने रखता है, इस बारे में ऐलन शोर, जो अमरीका में चिकित्सा के यू.सी.एल.ए. स्कूल में मनोरोग-विज्ञान के प्रोफेसर हैं, कहते हैं: "एक बच्चे का पहला रिश्ता अपनी माँ के साथ जुड़ता है। यह रिश्ता एक साँचे का काम करता है, जिसमें ढलकर वह दूसरों के साथ मधुर रिश्ता बनाने के काबिल बनता है।"

लेकिन दुःख की बात है कि निराशा, बीमारी या दूसरे दबावों की वजह से एक माँ अपने बच्चे को नज़रअंदाज़ कर सकती है, या "अपने दूधपिउवे बच्चे को भूल" सकती है। (यशायाह 49:15) मगर ऐसा बहुत कम होता है। देखा जाए तो माएँ खुद-ब-खुद अपने बच्चे से प्यार करने लगती है। खोजकर्ताओं ने पता लगाया है कि बच्चे को जन्म देते वक्त, माँओं के शरीर में ऑक्सीटॉसिन नाम के हार्मोन की मात्रा बढ़ जाती है। इसी हार्मोन की वजह से गर्भाशय सिकुड़ने लगता है और माँ के शरीर में बच्चे के लिए दूध बनने लगता है। इसके अलावा, माना जाता है कि ऑक्सीटॉसिन हार्मोन ही, जो कि स्त्री-पुरुष दोनों में पाया जाता है, माँओं को बिना किसी स्वार्थ के अपने बच्चे पर सारा प्यार लुटाने के लिए उभारता है।

प्यार की शुरूआत कहाँ से हुई?

जो लोग विकासवाद की शिक्षा को बढ़ावा देते हैं, वे सिखाते हैं कि माँ और बच्चे के बीच जैसा प्यार होता है, वैसे प्यार की शुरूआत इत्तफाक से हुई है। और इंसान के विकास के दौरान उनमें प्यार करने की काबिलीयत इसलिए बनी रही, क्योंकि जो ऐसा करते थे उन्हें इससे फायदा होता था। मिसाल के लिए, माँ की भूमिका पर लिखी एक पत्रिका कहती है कि जब हमारा दिमाग रेंगनेवाले जंतुओं से विकसित हो रहा था, तब जो भाग सबसे पहले बना उसी से हमारी तमाम भावनाएँ पैदा होती हैं। यह पत्रिका आगे कहती है कि इसी भाग की मदद से जच्चे-बच्चे के दिल जुड़ते हैं। माना कि इस भाग से हमारी भावनाएँ पैदा होती है, मगर क्या इसमें कोई तुक नज़र आता है कि एक माँ के दिल में अपने बच्चे के लिए जो प्यार होता है, उसकी शुरूआत इत्तफाक से होती है?

प्यार की शुरूआत कहाँ से हुई, इस सवाल के एक दूसरे जवाब पर गौर कीजिए। बाइबल बताती है कि इंसानों को परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है। यानी उनमें परमेश्वर के गुणों को ज़ाहिर करने की काबिलीयत है। (उत्पत्ति 1:27) और परमेश्वर का सबसे खास गुण है, प्यार। प्रेरित यूहन्ना ने लिखाः "जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता।" क्यों? "क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।" (1 यूहन्ना 4:8) ध्यान दीजिए कि इस वचन में यह नहीं लिखा है कि परमेश्वर में प्रेम है। इसके बजाय, यहाँ लिखा है कि परमेश्वर प्रेम *है*। यह दिखाता है कि वही प्यार का स्रोत है।

प्यार क्या है, इस बारे में बाइबल कहती हैः "प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। प्रेम कभी टलता नहीं।" (1 कुरिन्थियों 13:4-8) क्या यह यकीन करना सही लगता है कि इस लाजवाब गुण की शुरूआत इत्तफाक से हुई?

परमेश्वर के प्यार का आप पर क्या असर होता है?

अभी आपने प्यार का जो ब्यौरा पढ़ा, उससे क्या आपको ऐसा लगा कि काश, कोई मुझसे यह प्यार जताता? ऐसी ख्वाहिश करना लाज़िमी है। क्यों? क्योंकि हम "परमेश्वर की सन्तान" हैं। (प्रेरितों 17:29, *NHT*) हम प्यार पाने और प्यार जताने के लिए *बनाए* गए हैं। और हम इस बात का यकीन रख सकते हैं कि परमेश्वर हमसे बेइंतिहा प्यार करता है। (यूहन्ना 3:16; 1 पतरस 5:6, 7) इस लेख की शुरूआत में जिस आयत का ज़िक्र किया गया है, वह बताती है कि एक माँ अपने बच्चे से जितना प्यार करती है, उससे कहीं ज़्यादा परमेश्वर हमसे प्यार करता है और उसका प्यार हमेशा बना रहेगा।

अब आप शायद सोचेंः 'अगर परमेश्वर इतना बुद्धिमान, शक्तिशाली और प्यार करनेवाला है, तो वह दुःख-तकलीफों को क्यों नहीं मिटाता? वह मासूम बच्चों को मौत के मुँह क्यों जाने देता है? इतना अत्याचार क्यों होने देता है? वह इंसान को रोकता क्यों नहीं, जो अपनी लापरवाही और लालच की वजह से इस धरती को तबाह कर रहा है?' इन सारे सवालों के जवाब जानना बहुत ज़रूरी है।

मगर जो लोग परमेश्वर के वजूद पर शक करते हैं, वे शायद पूछेंः 'क्या इन सवालों के सही जवाब पाना मुमकिन है?' बेशक मुमकिन है। अलग-अलग देशों में रहनेवाले लाखों लोगों ने यहोवा के साक्षियों के साथ बाइबल अध्ययन करके इन सवालों के जवाब पाए हैं। इस पत्रिका के प्रकाशक आपको बढ़ावा देते हैं कि आप भी यहोवा के साक्षियों के साथ बाइबल अध्ययन करें। जैसे-जैसे आप परमेश्वर के वचन और उसकी सृष्टि का अध्ययन करने के ज़रिए उसके बारे में अपना ज्ञान बढ़ाएँगे, आपको यकीन हो जाएगा कि वह ऐसा परमेश्वर नहीं जिसे जानना हमारे लिए नामुमकिन है। इसके बजाय, वह एक ऐसा परमेश्वर है, जो "हम में से किसी से दूर नहीं!" —प्रेरितों 17:27.